

प्रलिस फैक्ट्स: 16 अगस्त, 2021

- [अल-मोहद अल-हदी अभ्यास: भारत-सऊदी अरब](#)
- [केव लायन](#)
- [पारसी नववर्ष: नवरोज](#)

अल-मोहद अल-हदी अभ्यास: भारत-सऊदी अरब

Al-Mohed Al-Hindi Exercise: India-Saudi Arabia

हाल ही में भारत और सऊदी अरब ने अल-मोहद अल-हदी अभ्यास (Al-Mohed Al-Hindi Exercise) नामक अपना पहला नौसेना संयुक्त अभ्यास शुरू किया।

- इस द्विपक्षीय अभ्यास पर फैसला वर्ष 2019 में आयोजित रियाद शखिर सम्मेलन में लिया गया।



प्रमुख बडि

संदर्भ:

- भारतीय नौसेना का जहाज़ (INS) कोच्चि इस अभ्यास में भाग ले रहा है। इस अभ्यास में दोनों नौसेनाओं के बीच कई तटीय और समुद्र आधारित अभ्यास शामिल हैं।
 - INS कोच्चि कोलकाता-श्रेणी के स्टील्थ गाइडेड-मिसाइल वधिवंसक का दूसरा जहाज़ है, जिसे भारतीय नौसेना द्वारा कोड नाम प्रोजेक्ट 15ए (Project 15A) के तहत बनाया गया था।
 - इस जहाज़ को 'नेटवर्क्स का नेटवर्क' (Network of Networks) कहा जाता है क्योंकि यह परष्कृत डिजिटल नेटवर्क, अत्याधुनिक हथियारों और सेंसर से लैस है जो किसी भी समुद्री खतरे से नपिटने में सक्षम है।
- एक-दूसरे की परिचालन प्रथाओं की गहरी समझ प्रदान करने के लिये दोनों नौसेनाओं के वषिय वशिषज्जों द्वारा व्याख्यान भी दिये जाएंगे।

लक्ष्य:

- इसका लक्ष्य इंटरऑपरेबिलिटी बढ़ाने के लिये सामरिक युद्धाभ्यास, खोज और बचाव अभियान तथा एक इलेक्ट्रॉनिक युद्ध अभ्यास करना है।

महत्त्व:

- यह खाड़ी कक्षेत्र में तेज़ी से बदलते घटनाक्रम के बीच दोनों देशों के मध्य बढ़ते रक्षा संबंधों को दर्शाता है।
- यह [हृदि महासागर](#) कक्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग और सुरक्षा को बढ़ाएगा।

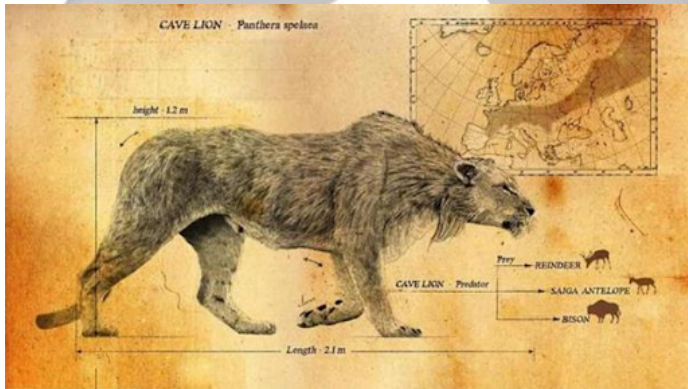
प्रमुख भारतीय समुद्री अभ्यास	
अभ्यास का नाम	देश का नाम
SLINEX	श्रीलंका
बोंगोसागर और IN-BN CORPAT	बांग्लादेश
जमिक्स	जापान
नसीम-अल-बहर	ओमान
इंद्र	रूस
ज़ैर-अल-बहरी	कतर
समुद्र शक्ति	इंडोनेशिया
भारत-थाई कॉरपेट	थाईलैंड
IMCOR	मलेशिया
समिबेक्स	सिंगापुर
औसइंडेक्स	ऑस्ट्रेलिया
मालाबार अभ्यास	जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका

केव लॉयन

Cave Lion

हाल ही में वैज्ञानिकों ने लगभग पूरी तरह से संरक्षित दो केव लॉयन (Cave Lion) शावकों की खोज की है जो 28,000 वर्ष पहले के थे, इनके उपनाम **बोरिस (Boris)** और **स्पार्टा (Sparta)** हैं।

- ये साइबेरिया के [परमाफ्रॉस्ट \(Permafrost\)](#), रूस में पाए गए। शावक एक-दूसरे से 15 मीटर की दूरी पर पाए गए थे, ये न केवल अलग-अलग जगह पर मले, बल्कि हज़ारों वर्षों के अंतर पर पैदा हुए थे।



प्रमुख बढि

संदर्भ:

- केव लॉयन (**पैंथेरा स्पेलिया-Panthera spelaea**), जिसे प्रायः मेगा-लॉयन के नाम से जाना जाता है, प्रागैतहासिक लॉयन की एक प्रजाति है जो अंतिम हिमयुग के दौरान उत्पन्न हुई थी।
- आयु- 2.6 मिलियन वर्ष पूर्व से 11,700 वर्ष पूर्व।
 - इसे आमतौर पर लॉयन की उप-प्रजात के रूप में रखा जाता है।
- यह अंतिम हिमयुग के दौरान पूरे उत्तरी यूरेशिया और उत्तरी अमेरिका में वितरण के साथ ही सबसे आम बड़े शिकारियों में से एक था। यह लगभग 14,000 साल पहले विलुप्त हो गया था।

व्यवहार और विशेषता:

- केव लॉयन प्रमुख शिकारी थे, जो हमियुग के हरिण, बाइसन और अन्य जानवरों का शिकार करते थे। ये लॉयन भी घात लगाने वाले शिकारी थे, जो प्रतीक्षा में लेटे हुए और प्रभावशाली गति, चपलता तथा ताकत के साथ अपने शिकार से नपिटने के लिये अपने नविस से बाहर निकलते थे।
 - 3 मीटर लंबा और 340 किलो वज़नी, यह बलिली की अब तक की सबसे बड़ी प्रजाति थी।
- हालाँकि सभी बलिलियों की तरह केव लॉयन कुछ ही दूरी तक शिकार का पीछा कर सकता था।
- अपने आकार, ताकत और अपेक्षाकृत लंबे पैरों के बावजूद केव लॉयन लंबी दूरी के शिकार करने में सक्षम नहीं थे।

खोज का महत्त्व:

- रूस के विशाल साइबेरियाई क्षेत्र में इसी तरह की खोज नियमिता के साथ बढ़ी है। जलवायु परिवर्तन विश्व के बाकी हिस्सों की तुलना में आर्कटिक को तेज़ गति से गर्म कर रहा है और जसिने कुछ क्षेत्रों में लंबे समय से परमाफ्रॉस्ट को पघिला दिया है।

परमाफ्रॉस्ट

परिचय:

- परमाफ्रॉस्ट अथवा स्थायी तुषार भूमि विह क्षेत्र है जो कम-से-कम लगातार दो वर्षों से शून्य डिग्री सेल्सियस (32 डिग्री F) से कम तापमान पर जमी हुई अवस्था में है।
 - परमाफ्रॉस्ट मट्टी में पत्तियाँ, टूटे हुए वृक्ष आदि बिना क्षय हुए पड़े रहते हैं। इस कारण यह जैविक कार्बन से समृद्ध होती है।
- ये स्थायी रूप से जमे हुए भूमि-क्षेत्र मुख्यतः उच्च पर्वतीय क्षेत्रों और पृथ्वी के उच्च अक्षांशों (उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों के निकट) में पाए जाते हैं।
- परमाफ्रॉस्ट पृथ्वी के एक बड़े क्षेत्र को कवर करते हैं। उत्तरी गोलार्ध में लगभग एक-चौथाई भूमि में परमाफ्रॉस्ट मौजूद है। यद्यपि भूमि-क्षेत्र जमे हुए होते हैं, लेकिन आवश्यक रूप से हमेशा बर्फ से ढके नहीं होते।

परमाफ्रॉस्ट का पघिलना:

- **आधारिक संरचना की क्षति:** कई गाँव परमाफ्रॉस्ट पर बने हैं। जब परमाफ्रॉस्ट जम जाता है, तो यह कंक्रीट से भी सख्त होता है। हालाँकि परमाफ्रॉस्ट का पघिलना घरों, सड़कों और अन्य आधारिक संरचनाओं को नष्ट कर सकता है।
- **ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन:** जैसे ही परमाफ्रॉस्ट पघिलता है, जीवाणु इस सामग्री को विघटित करना शुरू कर देते हैं। यह प्रक्रिया वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों को छोड़ती है।
- **रोग:** जब परमाफ्रॉस्ट पघिलता है, तो प्राचीन बैक्टीरिया और वायरस बर्फ तथा मट्टी में मौजूद होते हैं। ये नए न जमे हुए रोगाणु इंसानों और जानवरों को गंभीर रूप से बीमार कर सकते हैं।

पारसी नववर्ष: नवरोज़

Parsi New Year: Navroz

भारत में 16 अगस्त को नवरोज़ उत्सव मनाया जा रहा है।

- संपूर्ण विश्व में उत्तरी गोलार्ध में [वसंत वषि](#) (वसंत की शुरुआत का प्रतीक) के समय नवरोज़ त्योहार मनाया जाता है।

प्रमुख बटु

नवरोज़ के बारे में:

- नवरोज़ को पारसी नववर्ष के नाम से भी जाना जाता है।
- फारसी में 'नव' का अर्थ है नया और 'रोज़' का अर्थ है दिन, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'नया दिन' (New Day)।
- हालाँकि वैश्विक स्तर पर इसे मार्च में मनाया जाता है। नवरोज़ भारत में 200 दिन बाद आता है और अगस्त के महीने में मनाया जाता है क्योंकि यहाँ पारसी शहशाही कैलेंडर (Shahenshahi Calendar) को मानते हैं जिसमें लीप वर्ष नहीं होता है।
 - भारत में नवरोज़ को फारसी राजा जमशेद के बाद से जमशेद-ए-नवरोज़ (Jamshed-i-Navroz) के नाम से भी जाना जाता है। राजा जमशेद को शहशाही कैलेंडर बनाने का श्रेय दिया जाता है।
- इस त्योहार की खास बात यह है कि भारत में लोग इसे वर्ष में दो बार मनाते हैं- पहला ईरानी कैलेंडर के अनुसार और दूसरा शहशाही कैलेंडर के अनुसार जिसका पालन भारत और पाकिस्तान में लोग करते हैं। यह त्योहार जुलाई और अगस्त माह के मध्य आता है।
- इस परंपरा को दुनिया भर में ईरानियों और पारसियों द्वारा मनाया जाता है।
- वर्ष 2009 में नवरोज़ को [युनेसको](#) द्वारा भारत की अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत की सूची में शामिल किया गया था।
 - इस प्रतीति सूची में उन अमूर्त वरिसत तत्वों को शामिल किया जाता है जो सांस्कृतिक वरिसत की विविधता को प्रदर्शित करने और इसके महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करते हैं।

पारसी धर्म (ज़ोरोएस्टरनिडिज़्म)

- पारसी धर्म/ज़ोरोएस्टरनिडिज़्म पारसियों द्वारा अपनाए जाने वाले सबसे पहले ज्ञात एकेश्वरवादी विश्वासों में से एक है।
- इस धर्म की आधारशिला 3,500 वर्ष पूर्व प्राचीन ईरान में पैगंबर जरथुस्त्र (Prophet Zarathustra) द्वारा रखी गई थी।
- यह 650 ईसा पूर्व से 7वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव तक फारस (अब ईरान) का आधिकारिक धर्म था और 1000 वर्षों से भी अधिक समय तक यह प्राचीन विश्व के महत्त्वपूर्ण धर्मों में से एक था।
- जब इस्लामी सैनिकों ने फारस पर आक्रमण किया, तो कई पारसी लोग भारत (गुजरात) और पाकिस्तान में आकर बस गए।
- पारसी ('पारसी' फारसियों के लिये गुजराती है) भारत में सबसे बड़ा एकल समूह है। विश्व में इनकी कुल अनुमानित आबादी 2.6 मिलियन है।
- पारसी अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों में से एक है।

पारंपरिक नववर्ष के त्योहार

चैत्र शुक्लादः

- यह विक्रम संवत् के नववर्ष की शुरुआत को चिह्नित करता है जसि वैदिक [हवि] कैलेंडर के रूप में भी जाना जाता है।
- विक्रम संवत् उस दिने से संबंधित है जब सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर एक नए युग का आह्वान किया।

गुड़ी पड़वा और उगादः

- ये त्योहार कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र सहित दक्कन क्षेत्र में लोगों द्वारा मनाए जाते हैं।

नवरेहः

- यह कश्मीर में मनाया जाने वाला चंद्र नववर्ष है तथा इसे चैत्र नवरात्रिके पहले दिने आयोजित किया जाता है।

शाजबू चिरोबाः

- यह मैतेई (मणिपुर में एक जातीय समूह) द्वारा मनाया जाता है जो मणिपुर चंद्र माह शाजबू (Manipur lunar month Shajibu) के पहले दिने मनाया जाता है, यह हर वर्ष अप्रैल के महीने में आता है।

चेटी चंडः

- संधि 'चेटी चंड' को नववर्ष के रूप में मनाते हैं। चैत्र माह को संधि में 'चेत' कहा जाता है।
- यह दिने संधियों के संरक्षक संत उदयलाल/झूलेलाल की जयंती के रूप में मनाया जाता है।

बहिः

- यह साल में तीन बार मनाया जाता है।
- बोहाग बहि या रोंगाली बहि, जसि हतबहि (सात बहि) भी कहा जाता है, यह असम तथा पूर्वोत्तर भारत के अन्य भागों में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक आदवासी जातीय त्योहार है।
- रोंगाली या बोहाग बहि असमिया नववर्ष और वसंत त्योहार है।

बैसाखीः

- इसे भारतीय किसानों द्वारा धन्यवाद दविस के रूप में मनाया जाता है।
- सखि समुदाय के लिये भी इसका धार्मिक महत्त्व है क्योंकि इसी दिने गुरु गोबिंद सिंह द्वारा खालसा पंथ की नींव रखी गई थी।

लोसूंगः

- इसे नामसूंग के रूप में भी जाना जाता है, यह सकिक्मि का नया वर्ष है।
- यह आमतौर पर वह समय होता है जब किसान खुश होकर अपनी फसल का जश्न मनाते हैं।

